समाज विज्ञान

1- प्रस्तावना :

राष्ट्र का निर्माण एवं प्रगति नागरिकों के ऊपर निर्भर है । नागरिकों की सोच सकारात्मक एवं समग्र, व्यवहार संतुलित एवं मर्यादित, चरित्र धवल, ज्ञान एवं सूचना सम्पन्न, दृष्टि मानवीय और चेतना प्रखर हो तो राष्ट्र की उन्नति दिन-दूनी रात-चौगुनी होगी । जन्म से मृत्युपर्यन्त व्यक्ति परिवेश एवं समाज से अन्तःक्रिया करता रहता है । अतएव राष्ट्र के नागरिकों को समाज एवं परिवेश की विस्तृत जानकारी एवं समग्र-समझ अपरिहार्य है । इन्हीं तथ्यों के आधार पर समाज विज्ञान को माध्यमिक स्तर पर एक अनिवार्य विषय बनाया गया है, साथ ही, इस दृष्टि को सम्पोषित करने वाले विषयों को भी इसी के अन्तर्गत समाहित किया गया है ।

समाज विज्ञान के पाठ्यक्रम मे मुख्य रूप से भूगोल, इतिहास, राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र के प्रकरण सम्मिलित किये गये हैं, साथ ही, समाज-शास्त्र और वाणिज्य-शास्त्र के भी कुछ प्रकरण सम्मिलित हैं । ये सभी साथ मिलकर देशकाल की पृष्ठभूमि में समाज के समग्र दृष्टिकोण को प्रस्तुत करते हैं। साथ ही, हम जान पाते हैं कि ये सभी विषय समाज एवं राष्ट्र-निर्माण में एक दूसरे से कैसे और कितने जुड़े हैं । पुनः इनकी पड़ताल की भिन्न विधियाँ, समाज के अध्ययन में विविध आयाम प्रस्तुत करती है जिससे उसकी एक समग्र सोच(दृष्टिकोण)बन पाती है ।

2- उद्देश्य

- समाज के परिवर्त्तनशील स्वरूप की समझ पैदा करना ।
- देशकाल के परिप्रेक्ष्य में समाज के परिवर्त्तन की प्रक्रिया की समझ पैदा करना जिससे समाज वर्त्तमान स्वरूप में विकसित हुआ है ।
- यह समझ पैदा करना कि परिवर्त्तन एवं विकास की प्रक्रिया सतत है ।
- इतिहास के आईने में समकालीन भारत के राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक परिदृश्य की समझ पैदा करना ।
- स्वतंत्र भारत में राष्ट्रीय विकास पर विश्व-व्यवस्था के असर की समझ बनाना ।
- प्रजातांत्रिक एवं सामाजिक मूल्यों की उत्तरोत्तर विकासात्मक स्थापना की समझ बनाना ।
- भारत में स्वाधीनता-संग्राम का स्वरूप, उसमें लोक भागीदारी अन्तर-निहित मूल्य एवं आदर्श की समझ पैदा करना ।
- सह-अस्तित्त्व की अभिप्रेरक समझ विकसित करना ।
- शिक्षार्थियों को भारतीय संविधान में अन्तर्निहित मूल्यों से अवगत कराते हुए उन्हें जिम्मेवार नागरिक के रूप में विकसित करना ।
- आदर्श-नागरिकता के गुणों को अक्षुण्ण बनाये रखना ।
- भारत की जलवायु, भूमि, लोग, धर्म आदि की विविधता से अवगत होना एवं इनके लिए सुरक्षा एवं सम्मान की भावना का विकास करना ।
- भारत के विविधतापूर्ण पर्यावरण से अवगत होना, उसमें अन्तःक्रियाएँ और भविष्य में पड़ने वाले उनके प्रभावों से अवगत होना ।
- अनेकता में एकता की भावना का उत्तरोत्तर विकास करना ।

- भारत की प्राकृतिक, सांस्कृतिक धरोहरों से परिचित कराना एवं उनकी सुरक्षा की भावना का विकास करना ।
- भारत की अर्थव्यवस्था, राजनीति, सामाजिक व्यवस्था, पर्यावरण की समझ, समस्याएँ एवं चुनौतियों से अवगत होना ।
- तनावमुक्त जीवन-शैली विकसित करने का प्रयास करना ।
- सामुदायिक गतिविधियों मे अधिकाधिक भागीदारी के लिए प्रेरित करना ।
- सामाजिक/राष्ट्रीय विकास के आँकड़ों के विश्लेषण एवं पड़ताल के लिए वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक दृष्टिकोण पैदा करना ।
- राष्ट्र निर्माण में श्रम की महत्ता से अवगत होना एवं इस भाव को जगाना कि कर्म(श्रम) ही जीवन है ।
- शैक्षिक एवं सामाजिक कौशलों यथा तार्किक सोच, वाणी एवं विचार में स्पष्टता, दूसरों की सहायता एवं सहयोग में आगे आना, आपातकाल में जन-सहयोग का नेतृत्व करना आदि का विकास समझाना ।
- मानवता, सजगता, सहजता और सामाजिक गतिविधियों मे प्रभावकारी भूमिका अदा करने के लिए आवश्यक व्यक्तिगत, सामाजिक, नैतिक, राष्ट्रीय, अध्यात्मिक गुणों से सम्पन्न करना ।
- उन्हें एक पूर्ण व्यक्ति के रूप में विकसित करना ।

अंक विभाजन एवं न्यूनतम संवाद अवधि

वर्ग - IX

समय - 3 घंटे

		घंटी	अंक - 100
इकाई - I	समकालीन विश्व एवं भारत-I	60	25
इकाई - II	भारत : भूमि एवं लोग	60	25
इकाई - III	प्रजातांत्रिक राजनीति	52	22
इकाई - IV	अर्थशास्त्र की समझ	52	22
इकाई - V	आपदा प्रबन्धन	16	06
	कुल -	240	100

वर्ग - X

समय - 3 घंटे

		अंक - 100
इकाई - I	समकालीन विश्व एवं भारत -II	25
इकाई - II	भारत: संसाधन एवं उपयोग	25
इकाई - III	प्रजातांत्रिक राजनीति-II	22
इकाई - IV	अर्थशास्त्र की समझ	22
इकाई - V	आपदा प्रबन्धन	06

वर्ग - IX

समकालीन विश्व एवं भारत -I

इकाई	विषयवस्तु	उद्देश्य	संसाधन/क्रियाशीलन
1- भौगोलिक खोज	अंधकारमय युग आधुनिक युग का प्रार्दुभाव आधुनिक खोज और पूर्ववर्त्ती प्रयास औपनिवेशिक खोज और विस्तार भौगोलिक खोजों के परिणाम	वृहत्तर विश्व की शुरुआत आवश्यकता आविष्कार की जननी है, की समझ पैदा करना । प्रयास से लक्ष्य हासिल किए जा सकते हैं वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास एवं उससे लाभ	संग्रहालयों का भ्रमण, चित्रों ऐतिहासिक कथाओं के संदर्भ
2- अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम	पृष्ठभूमि, कारण, परिणाम, औद्योगिकरण का प्रभाव	प्रजातांत्रिक विचार, उदारता अमेरिकी संग्राम की देन है । उपनिवेशवाद शोषण को जन्म देता है । राष्ट्रीयता की भावना सबसे ऊपर होनी चाहिए । अधिकारों के प्रति सजगता राष्ट्रीय, जातीय, नस्लीय एकता शिक्षा का बहुददेशीय उपयोग	विभिन्न नक्शों की मदद, ग्लोब, चित्रों, कहानियों, ऐतिहासिक संदर्भ, मध्यकालीन विश्व की समीक्षित अवस्था ।
3- फ्रांस की क्रांति	पुरातन व्यवस्था विभिन्न सामाजिक वर्गों का उदय एवं उनके दर्शन स्टेट्स जनरल की बैठक, परिणाम क्राँति का प्रादर्भाव, कारण, परिणाम और महत्त्व	गलत प्रशासनिक नीतियाँ विद्रोह पैदा करती है । कलम की ताकत तलवार से ज्यादा बड़ी होती है । लोककल्याण की अनदेखी शासन में सत्ता से बाहर करती है ।	नक्शा, चित्र

		जनसाधारण की इच्छाओं का सम्मान करना चाहिए । शोषण के प्रति जागरूकता और अधिकारों के प्रति सजगता । एकता में ताकत	
4- नाजीवाद	जर्मनी की तात्कालिक स्थिति एवं हिटलर के उदय की पृष्ठभूमि(कारण) नाजीवादी दर्शन एवं नाजीवाद का प्रभाव	पृष्ठभूमि से अवगत कराना । जन असंतोष का फायदा विरोधी शक्तियों द्वारा उठाना । शान्ति का नकारात्मक दिशा में उपयोग खतरनाक एवं राष्ट्रविरोधी होता है । उग्र-राष्ट्रवाद खतरनाक होता है । तानाशाही शासन व्यवस्था के दूरगामी दुष्प्रभाव को समझना । निजी हितों का संरक्षण राष्ट्र के लिए खतरा । प्रजातांत्रिक मूल्यों में विश्वास को बढ़ावा देना ।	चित्रों, वृत्तचित्रें, उपन्यास 'मैकॉफ' का संदर्भ
5- प्रथम विश्वयुद्ध एवं द्वितीय विश्वयुद्ध	विश्वयुद्धों के कारण, परिणाम और प्रभाव	उपनिवेशवाद साम्राज्यवाद का जनक है - इसकी समझ विकसित करना । विवादों का सर्वश्रेष्ठ हल शांति और वार्त्ता है । विवादों का हल परस्पर अहंकार के त्याग से होता है ।	विडियो क्लिप, फिल्म प्रदर्शन(पर्ल हार्बर) नेताओं के चित्र/राष्ट्रों के नक्शे और भौगोलिक स्थिति

		युद्ध का दूरगामी प्रभाव भावी समाज पर पड़ता है । युद्ध से सामाजिक-आर्थिक नुकसान होता है । शांति सर्वश्रेष्ठ है और स्थायी हल देती है ।	
6- आदिवासी समाज और उपनिवेशवाद	आदिवासी जीवन की संस्कृति आदिवासी समाज में उपनिवेशवाद के विरुद्ध गोलबंदी बिरसा मुण्डा, चुआड़, तिलका माँझी, बसरा आदि ।	18-19वीं सदी के भारतीय वन्य जीवन से अवगत होना । जंगली जीवन की सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक, अवधारणाओं से परिचित कराना । तत्कालीन भू-राजस्व की व्यवस्था से परिचित होना । क्षेत्रवाद/जातिवाद/समुदाय वाद के प्रति शक्ति भावना । विदेशियों की गलत नीतियों के खिलाफ विरोध करना ।	चित्रों, फिल्मी(धरती आबा बिरसा मुंडा) । स्थानीय बुजुर्गों से वार्त्तालाप । क्षेत्र में जाकर स्थानीय संस्कृतियों की जानकारी लेना ।
7- कृषि और खेतिहर समाज	विभिन्न प्रकार की खेतियों का इतिहास । ग्रामीण-अर्थव्यवस्था में इसकी जरूरत । वर्त्तमान समय में ग्रमीण-अर्थव्यवस्था में परिवर्त्तन, संदर्भ बिहार-केला, गन्ना, गेहूँ, लीची । संयुक्त राज्य अमेरिका - गेहूँ, कपास ।	शिक्षार्थियों में कृषि के प्रति लगाव और सम्मान का भाव पैदा करना । कृषि सामाजिक परिवर्त्तन का माध्यम हो सकता है । कृषि में वैज्ञानिक दृष्टिकोण कृषकों के लिए लाभदायक होता है ।	चित्र / वीडियो / वार्त्तालाप, क्षेत्र भ्रमण ।

8- शांति प्रयास	राष्ट्रसंघ राष्ट्रसंघ का प्रयास राष्ट्रसंघ की विफलता संयुक्त राष्ट्रसंघ उद्देश्य, सफलता ।	शांति स्थापना के लिए सामूहिक प्रयास की आवश्यकता है । शांति में विकास निहित होता है । परस्पर विश्वास और सांस्कृतिक आदान-प्रदान शांतिप्रयासों को मजबूती प्रदान करते हैं ।	विडियो क्लिप/ फिल्में/ चित्र/वाद-विवाद/ मानचित्र-अध्ययन/अखबारों-पत्रिकाओं में छपे बयान ।

IX

न्यूनतम संवाद अवधि

इकाई	घंटियों की संख्या	कुल समय (घंटा में)
1. भौगोलिक खोज	- 08	- 5 घंटे
2. अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम	- 06	- 4 घंटे
3. फ्राँस की क्रांति	- 08	- 5 घंटे
4. नाजीवाद	- 07	- 5 घंटे
5. प्रथम विश्वयुद्ध एवं द्वितीय विश्वयुद्ध	- 07	- 5 घंटे
6. आदिवासी समाज और उपनिवेशवाद	- 08	- 5 घंटे
7. कृषि और खेतिहर समाज	- 08	- 5 घंटे
8-शांति प्रयास	- 08	- 5 घंटे
	योग : 60	39 घंटे

वर्ग - X

समकालीन विश्व एवं भारत - II

इकाई	विषयवस्तु	लक्ष्य/उद्देश्य	प्रक्रिया/संसाधन
1- यूरोप में राष्ट्रवाद	1830 ई० के बाद यूरोप में राष्ट्रवाद का विकास । मेजिनी आदि के विचार । पोलैण्ड, हंगरी, इटली, जर्मनी, ग्रीस आदि के आन्दोलनों की सामान्य विशेषताएँ ।	यूरोप में उभरती राष्ट्रीयता की भावना से परिचित कराना । इटली के एकीकरण में मेजिनी, गैरीबाल्डी, कावूर के योगदानों को समझना ।	फिल्में, चित्र, विडियोक्लिप, मानचित्र अध्ययन ।

		जर्मनी के एकीकरण में विलियम बिस्मार्क, बुद्धिजीवियों एवं शिक्षा संस्थानों का योगदान । यूनान, पोलैण्ड, हंगरी में तत्कालीन अवस्था के प्रति राष्ट्रीयता के प्रभाव से उभरे विद्रोहों से परिचित कराना ।	
2. समाजवाद एवं साम्यवाद	1917 के बॉल्शेविक क्रांति	रूस में जार के शासन की विशेषताओं से परिचित कराना । मार्क्सवादी विचारों एवं ऐतिहासिक व्याख्या की जानकारी देना । समाजवाद की परिकल्पना से परिचित कराना । लेलिन के योगदान से परिचित कराना ।	
3- हिन्द-चीन में राष्ट्रवादी आंदोलन	हिन्द-चीन में फ्राँसीसी उपनिवेशवाद फ्राँसीसियों के विरुद्ध क्रमिक संघर्ष फान-दिन ,फाँग-फाँग,बोइ चाउ, नागू एन एस क्यू द्वितीय विश्वयुद्ध और मुक्ति संघर्ष अमेरिका और द्वितीय विश्वयुद्ध	उपनिवेशवाद का शिकार एशियाई देशों में हिन्द-चीन (इंडानेशिया) की तत्कालीन परिस्थितियों से अवगत करना । इण्डोनेशिया के राष्ट्रवादी नेताओं की स्वतंत्रता हेतु किए गए प्रयासों से अवगत होना । इण्डोनेशिया का फ्राँस के विरुद्ध मुक्तिसंघर्ष । द्वितीय विश्वयुद्ध में उन परिस्थितियों की समझ, जिनसे अमेरिका विश्वयुद्ध में शामिल	चित्र, फिल्म, एशियाई भूगोल का मानचित्र

		हुआ ।	
4- भारत में राष्ट्रवाद (1914-1930)	प्रथम विश्वयुद्ध के कारण और परिणाम का भारत से अंतर्संबंध । खिलाफत आंदोलन असहयोग आंदोलन सविनय अवज्ञा आंदोलन (पृष्ठभूमि, कारण, परिणाम) किसान, मजदूर और जन-जातियों का विद्रोह । विभिन्न राजनीतिक पार्टियों की गतिविधियाँ ।	प्रथम विश्वयुद्ध का संक्षिप्त परिचय, भारत के राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़ना । ब्रिटिश हुकुमत की वादा-खिलाफी को समझना, राष्ट्रीय आन्दोलन में हिन्दू-मुस्लिम एकता । सत्याग्रह से परिचय एवं उसके दूरगामी लक्ष्य से अवगत होना । शोषण की नीतियों के खिलाफ सत्याग्रह में लोकभागीदारी को बढ़ाने एवं उसकी पृष्ठभूमि, कारण, परिणाम की समझ पैदा करना । सविनय अवज्ञा आंदोलन के भारतीय एवं ब्रिटिश सत्ता पर प्रभाव से अवगत होना । अंग्रेजी नीतियों के विरोध में देश के विभिन्न वर्गों और क्षेत्रों में उठनेवाले विद्रोहों का स्वरूप जानना । तत्कालीन राजनीतिक पार्टियों यथा कांग्रेस, साम्यवादी, मुस्लिमलीग, स्वराज पार्टी, आर० एस० एस० की गतिविधियों / क्रियाकलापों से अवगत होना ।	फिल्में, विडियोक्लिप, चित्र, स्वतंत्रता सेनानियों से साक्षात्कार संग्रहालय भ्रमण, मानचित्र अध्ययन स्वतंत्रता सेनानियों से साक्षात्कार नाटक-प्रदर्शन, मुखौटे नाट्य रूपान्तरण
5- अर्थव्यवस्था और आजीविका	औद्योगिकीकरण (1850-1950) ब्रिटेन और भारत में	औद्योगिकरण के कारणों की समझ, उपनिवेशवाद	विडियोफिल्म, चित्र, फिल्में

	औद्यागिकीकरण औद्योगिक उत्पादन एवं कुटीर उद्योगों के बीच संबंध मजदूरों की आजीविका (ब्रिटेन और भारत) संगठित और असंगठित क्षेत्रों में काम करने वाले ब्रिटेन और भारत के मजदूरों का जीवन-स्तर	की व्यवस्था से उपजे शोषक और शोषित देशों की अर्थव्यवस्था के अवगत होना, कुटीर उद्योगों की उपयोगिता एवं उनके प्रति सौन्दर्यबोध, आधुनिक समाज में आए परिवर्त्तन, मशीनी युग से मजदूरों की स्थिति, कुटीर उद्योग से अर्थव्यवस्था का संबंध । मजदूरों के जीवनस्तर के प्रति समझ और मानवीय दृष्टिकोण का विकास ।	कुटीर उद्योगों के क्षेत्र का भ्रमण असंगठित क्षेत्र में लगे मजदूरों के जोखिम और संगठित क्षेत्र में कार्यरत मजदूरों के जोखिम में अंतर दिखाना । कारखाने में काम करने वाले मजदूरों के जीवनस्तर का अध्ययन ।
6- शहरीकरण एवं शहरी जीवन	शहरीकरण की पद्धति प्रवजन और शहरीकरण शहरों का विकास, सामाजिक बदलाव और शहरी जीवन व्यवसायी वर्ग, मध्यम वर्ग, मजदूर वर्ग और शहरीकरण	शहरीकरण की पृष्ठभूमि एवं उससे उत्पन्न स्थितियों की समझ बनाना । उसका प्रभाव समझाना । शहरीकरण के संदर्भ में नगरों एवे छोटे शहरों के बीच के अंतर को समझाना ।	अखबारों, पत्र-पत्रिकाओं में दी गई सूचनाओं का संग्रह
7- व्यापार और भूमंडलीकरण	19वीं तथा प्रारंभिक 20वीं शताब्दी में विश्वबाजार का विस्तार और एकीकरण दो महायुद्धों के दरम्यान व्यापार और अर्थव्यवस्था 1950 ई॰ के दशक के बाद परिवर्त्तन	विश्वबाजार के स्वरूप की समझ और उसकी उपयोगिता, लाभ और हानि । विश्वव्यापी आर्थिक संकट का अर्थव्यवस्था पर प्रभाव, विश्वबाजार के आलोक में बदलते अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध की समझ पैदा करना । आज के जीविकोपार्जन और भूमंडलीकरण का अन्तर्साम्य अध्ययन क्षेत्र	विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय कम्पनियों के logo इकट्ठे करना । Brand Name की उत्पाद से पहचान सं कंपनियों से सम्बद्धता का संकलन विभिन्न कम्पनियों के CEO के साक्षात्कार का अवलोकन एवं चित्रों का संग्रहण ।

		1945 से 1960 के दशक के बीच अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक सम्बन्ध ।	घरेलू उपयोग की वस्तुओं की कम्पनियों के साथ सम्बद्धता की पहचान/अपने परिवेश में उसका इस्तेमाल करने वाले लोगों का का वस्तुओं के साथ वर्गीकरण एवं आँकड़ा संग्रहण ।
8- प्रेस, संस्कृति और राष्ट्रवाद	यूरोप में छपाई का इतिहास । 19वीं सदी के भारत में प्रेस का विकास । प्रिन्ट-संस्कृति, आम-बहस और राजनीतिक-सम्बन्ध ।	छपाई यंत्रों के आविष्कार एवं क्रमिक विकास का शिक्षा और ज्ञान पर प्रभाव । उससे उत्पन्न राष्ट्रीयता एवं संस्कृति से अवगत होना । भारतीय समाज पर प्रेस के प्रभाव, प्रिन्ट मीडिया द्वारा उभारे जानेवाले मुददों एवं उससे जुड़े जनमानस की प्रकृति की समझ पैदा करना ।	

X

न्यूनतम संवाद अवधि

इकाई		घंटियों की संख्या		कुल समय (घंटा में)
1. यूरोप में राष्ट्रवाद	-	07	-	4 घंटा 40 मिनट
2. हिन्द-चीन में राष्ट्रवादी आंदोलन	-	07	-	4 घंटा 40 मिनट
3. भारत में राष्ट्रवाद-	-	14	-	9 घंटा 20 मिनट
4. अर्थव्यवस्था और आजीविका	-	08	-	5 घंटा 20 मिनट
5. शहरीकरण एवं शहरी जीवन	-	06	-	4 घंटा
6. व्यापार और भूमंडलीकरण	-	09	-	6 घंटा
7. प्रेस, संस्कृति और राष्ट्रवाद	-	09	-	6 घंटा
	योग :	60		39.20

विषय - भूगोल

वर्ग - IX एवं X

1- प्रस्तावना

राष्ट्र की उन्नति एवं निर्माण नागरिकों के ऊपर निर्भर है । नागरिकों का सोच सकारात्मक एवं समयानुसार, व्यवहार संतुलित एवं मर्यादित, चरित्र धवल, ज्ञान एवं सूचना-सम्पन्न, दृष्टि मानवीय और चेतना प्रखर हो तो राष्ट्र की उन्नति दिन-दूनी रात चौगुनी होती रहती है । जन्म से मृत्युपर्यन्त व्यक्ति परिवेश एवं समाज से अन्त:क्रिया करता रहता है । अतएव राष्ट्र के नागरिकों को समाज एवं परिवेश की विस्तृत जानकारी एवं समग्र समझ अपरिहार्य है । इन्हीं तथ्यों के आधार पर समाज विज्ञान को माध्यमिक स्तर पर एक अनिवार्य विषय बनाया गया है; साथ ही , इस दृष्टि को सम्पोषित करने वाले विषयों में भूगोल को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है । भूगोल ऐसे ही विषयों में से एक है । यह एक मात्र विषय है जो देश के नागरिकों को उसके पर्यावरण, संसाधन तथा संस्कृति से एकीकृत परिचय कराता है । दुनिया को समझने की बुनियाद भी भूगोल के द्वारा ही रखी जाती है ।

वर्ग - IX

भारत : भूमि एवं लोग

इकाई	विषयवस्तु	उद्देश्य	संसाधन/क्रियाशीलन
1. स्थिति एवं विस्तार	विश्व मानचित्र पर भारत की स्थिति । भारत का भौगोलिक विस्तार ।	विश्व में भारत की भौगोलिक स्थिति एवं उसके विस्तार की जानकारी देना ।	मानचित्र । भारत से संबंधित समसामयिक घटनाक्रमों/गतिविधियों का संकलन एवं रिकार्ड ।
2. भौतिक स्वरूप	संरचना एवं उच्चावच । भौतिक विभाग ।	स्थलाकृतियों एवं उनके स्वरूप की समझ उत्पन्न करना ।	भारत का प्राकृतिक मानचित्र, भ्रमण, अवलोकन ।
3. अपवाह स्वरूप	अपवाह तंत्र । नदियाँ, जलाशय । मानव सभ्यता की जीवन रेखा के रूप में नदियाँ । नदियों का संरक्षण एवं प्रदूषण के रोकथाम के उपाय। मानव जीवन पर प्रभाव ।	नदियों के दिशागत बहाव की समझ एवं मानव-जीवन में नदियों की उपयोगिता एवं उनके संरक्षण, उचित दोहन, प्रदूषण के स्रोत की समझ विकसित करना ।	अवलोकन, चित्र, मॉडल, धार्मिक पर्व त्योहारों में नदी की उपयोगिता । समाचार-पत्र, पत्रिकाओं की कतरनों का संकलन ।
4. जलवायु	भारतीय जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक । मानसून एवं उसका स्वभाव ।	भारतीय जन-जीवन को प्रभावित करने वाले भौगोलिक तत्त्वों की समझ	अवलोकन, अनुभवों का आदान-प्रदान, विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले परिचितों से

	वर्षा-प्रकार। ऋतुएँ मानव-जीवन पर इनका समेकित प्रभाव ।	एवं उनसे समन्वय विकसित करने की अवधारणा ।	पत्राचार ।
5. प्राकृतिक वनस्पति एवं वन्य-प्राणी	वनस्पतियों के प्रकार, महत्त्व, वितरण । वनों में निवास करने वाले जीव-जंतुओं की उपयोगिता, महत्त्व । वनस्पति एवं जीव जंतुओं का संरक्षण ।	वनस्पतियों, जीव-जंतुओं की विविधताओं एवं महत्त्व से परिचित होना तथा उनके संरक्षण के प्रति जागरूकता पैदा करना ।	चित्रों का संकलन, अनुभव, साक्षात्कार, भ्रमण एवं वृत्तचित्र । मानचित्र बनाकर विभिन्न प्रकार के वनस्पति क्षेत्र को दर्शाना । विलुप्त होती वनस्पति एवं वन्य-प्राणियों से संबंधित चित्र एवं सूचनाओं का संकलन कर उसके संरक्षण का प्रयास । परिवेश में मिलनेवाले वनस्पति एवं जीवों से संबंधित सूचनाएँ एकत्र करना ।
6. जनसंख्या - जनसंख्या का आकार	घनत्व, वितरण, जनसंख्या परिवर्त्तन को निर्धारित एवं प्रभावित करने वाले कारक - वृद्धि, प्रवजन, शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधायें, व्यावसायिक संरचना, राष्ट्रीय जनसंख्या नीति । जनसंख्या वृद्धि के दुष्प्रभाव ।	जनसंख्या को प्रभावित करनेवाले तत्त्वों की पहचान एवं उसके दुष्प्रभाव के प्रति सजग बनाना ।	क्षेत्र विशेष का भ्रमण जहाँ अधिक आबादी हो । मानचित्र बनाकर जनसंख्या के घनत्व और वितरण को दर्शाना रोजगार कार्यालय से निबंधित व्यक्तियों की संख्या का पता करना तथा नियुक्ति के अवसरों से उसकी तुलना ।
7. भारत के पड़ोसी देश	स्थिति एवं विस्तार । संक्षिप्त परिचय : नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, श्रीलंका एवं पाकिस्तान । जलवायु की विशेषताएँ । उद्योग-धंधे एवं खनिज । उद्योग-धंधों का अर्थव्यवस्था पर प्रभाव ।	भारत के पड़ोसी देशों की भौगोलिक विविधताओं से परिचित कराना ।	मानचित्र पर भारत के पड़ोसी देशों की पहचान करना, पड़ोसी देशों की राजधानी एवं प्रमुख नगरों को मानचित्र पर दिखाना ।

8.मानचित्र अध्ययन	मापक-परिभाषा, उपयोगिता । मापक प्रदर्शन की विधियाँ । सरल तथा तुलनात्मक मापक ।	मानचित्र अध्ययन की विभिन्न विधियों से अवगत होना ।	मानचित्र, स्केल, मापक के प्रकार।
9. क्षेत्रीय अध्ययन	भूमिगत जलस्तर में गिरावट : कारण एवं उपाय । भूमि : उपयोग के स्वरूप में परिवर्त्तन प्रदूषण : प्रकार, कारण एवं बचाव ।	क्षेत्रीय अध्ययन के प्रति जागरूकता पैदा करना ।	प्रभावित क्षेत्रों का भ्रमण, निवासियों से साक्षात्कार ।

परियोजना (प्रोजेक्ट) :

विलुप्त होनेवाले वन्य-प्राणियों/वनस्पतियों के चित्र, छाया-चित्र, छाया-चित्र द्वारा रिपोर्ट तैयार करना ।

अपने किसी गाँ/मुहल्ले का अवलोकन करने के पश्चात् वहाँ के जलस्तर की गिरावट, भूमि उपयोग और प्रदूषण की स्थिति पर रिपोर्ट तैयार करना ।

चार्ट पेपर पर चित्र द्वारा जनसंख्या के कुप्रभावों को दर्शाना ।

वर्ग - X

भारत : संसाधन एवं उपयोग

इकाई	विषयवस्तु	उद्देश्य	संसाधन/क्रियाशीलन
1. (क) संसाधन	संसाधन का महत्त्व, प्रकार, संसाधन नियोजन, संसाधनों का संरक्षण । सतत विकास की अवधारणा । प्राकृतिक संसाधन -भूमि संसाधन, मृदा निर्माण, मृदा के प्रकार एवं वितरण, भूमि उपयोग का बदलता स्वरूप, भूक्षरण और भूसंरक्षण ।	संसाधन के विभिन्न स्त्रोतों एवं उसकी उपयोगिता से अवगत होना । संरक्षण के प्रति जागरूक होना ।	चित्र अवलोकन । यह पता करना कि आज जहाँ भवन बने हैं, तीस चालीस वर्ष पहले वहाँ क्या था एवं उस भूमि का उपयोग किस रूप में होता था । साक्षात्कार (बड़े-बुजुर्गों से) ।

इकाई	विषयवस्तु	उद्देश्य	संसाधन/क्रियाशीलन
(ख) कृषि-संसाधन	महत्त्व, कृषि के प्रकार, भारतीय कृषि की मुख्य विशेषताएँ, प्रमुख फसलें, राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में कृषि का योगदान, रोजगार, उत्पादन, खाद्य सुरक्षा, वैश्वीकरण एवं कृषि पर इसका प्रभाव, पशुपालन और मत्स्य पालन ।	देश के विभिन्न भागों की खेती में प्रयुक्त विभिन्न तरीकों एवं विभिन्नताओं की जानकारी देना तथा बाजार पर पड़ने वाले प्रभावों से अवगत होना ।	बाजार समिति के प्रांगण का अवलोकन एवं साक्षात्कार । चार्ट एवं ग्राफ पेपर पर फसलों के उत्पादन को दिखाना ।
(ग) जल-संसाधन	जल के स्रोत, वितरण, जलसंसाधन का उपयोग, बहुद्देशीय परियोजनाएँ, जल संकट, जल-संरक्षण एवं प्रबन्धन की आवश्यकता, वर्षा जल-संग्रहण एवं उसका पुनर्चक्रण । सोन परियोजना का अध्ययन ।	जल-स्रोतों की उपलब्धता एवं उनसे संबंधित परियोजनाएँ, रोजगार एवं प्रबन्धन की समझ का विकास करना । प्रति व्यक्ति घटते जल की मात्रा के प्रति जागरूकता पैदा करना ।	चित्र, वृत्तचित्र, फिल्म, शैक्षिक भ्रमण, प्रदेश में स्थित कोसी, बाल्मिकी नगर, इन्द्रपुरी आदि बहुद्देशीय नदी परियोजनाओं का भ्रमण ।
(घ) खनिज संसाधन	खनिजों के प्रकार, वितरण, खनिजों का आर्थिक महत्त्व एवं खनिजों का संरक्षण ।	खनिजों की महत्ता, उपलब्धता एवं संरक्षण की महत्ता से अवगत होना ।	पड़ोसी प्रांत के खनिज बहुल क्षेत्रों का भ्रमण, खनिजों का अवलोकन ।
(ङ) वन एवं वन्य प्राणी संसाधन	प्रकार, वितरण, वन सम्पदा तथा वन्य जीवों का ह्रास एवं संरक्षण । वन्यजीव एवं जैव विविधता की उपयोगिता ।	वनों एवं वन्य प्राणियों के महत्त्व से अवगत होना तथा इनके विलुप्त होने के दुष्प्रभाव एवं संरक्षण के संबंध में जागरण ।	अभ्यारण्यों एवं उपवनों का भ्रमण करना ।

(च) शक्ति संसाधन	शक्ति संसाधन के प्रकार, परम्परागत एवं गैर-परम्परागत शक्ति के साधन, वितरण, उपयोग तथा संरक्षण ।	शक्ति संसाधनों की आवश्यकता से अवगत होना । नये संसाधनों के लिए खोजी प्रवृत्ति का विकास ।	परम्परागत एवं गैर-परम्परागत शक्ति के साधनों का अवलोकन । मानचित्र में शक्ति के साधन के केन्द्रों को दर्शाना ।
2. निर्माण उद्योग	उद्योगों का वर्गीकरण, क्षेत्रीय वितरण, राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में उद्योगों का योगदान । वैश्वीकरण का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव । उद्योगों से उत्पन्न प्रदूषण का प्रभाव । प्रदूषण को नियंत्रित करने के उपाय ।	राष्ट्र-निर्माण में उद्योग की भूमिका से अवगत होना तथा औद्योगीकरण के परिणामस्वरूप होने वाले प्रदूषण के प्रति सचेत होना ।	मानचित्र, चित्र तथा पंचवर्षीय योजनाओं में उद्योगों की स्थिति का ज्ञान ।
3. परिवहन, संचार और व्यापार	परिवहन के प्रकार एवं महत्त्व । संचार के माध्यम एवं उनका महत्त्व। राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय व्यापार पर परिवहन एवं संचार के साधनों का प्रभाव । जन-जीवन पर प्रभाव ।	व्यापारिक प्रगति में परिवहन एवं संचार के साधनों की भूमिका से अवगत होना । जनजीवन पर पड़नेवाले प्रभावों एवं उनकी उपयोगिता के प्रति सकारात्मक सोच पैदा करना ।	परिवहन, संचार एवं व्यापार से सम्बन्धित मॉडल का निर्माण, उनका अवलोकन करना तथा आस-पास में परिवहन साधनों के उपयोग पर रिपोर्ट तैयार करना ।
4. बिहार : प्राकृतिक संसाधन एवं जनसंख्या	कृषि संसाधन, जल संसाधन, वन, वन्य-जीव एवं संरक्षण, खनिज संसाधन, शक्ति संसाधन । उद्योग एवं परिवहन । जनसंख्या आकार, घनत्व, वितरण । नगरों का विकास ।	बिहार के संसाधनों की जानकारी प्राप्त करना, बिहार के कृषि, वन, वन्यजीव, उद्योग तथा परिवहन की विशेषताओं को ज्ञात करना । जनसंख्या, घनत्व, वितरण एवं नगरों की विकास प्रवृत्तियों को समझना ।	बिहार के अभ्यारण्य, बाँध, नहर और उद्योगों को सूचीबद्ध करना । मानचित्र पर नगरों तथा औद्योगिक केन्द्रों को दिखाना ।

5. मानचित्र अध्ययन	उच्चावच प्रदर्शन की विधियाँ । समोच्च रेखाओं पर विभिन्न भू-आकृतियों का प्रदर्शन - पर्वत, पठार, जलप्रपात एवं V आकार की घाटी ।	उच्चावच को समतल कागज पर कैसे प्रदर्शित करें, इसकी समझ पैदा करना ।	समोच्च रेखाओं का ग्राफ, चित्र तैयार करना ।

परियोजना (प्रोजेक्ट) :

- विभिन्न प्रकार की फसलों, उद्योगों, जल-परियोजनाओं तथा वन-संसाधन पर फोटोग्राफों, मानचित्रों तथा प्रकाशित छाया-चित्रों के साथ प्रोजेक्ट तैयार करना ।
- आस-पास के जल प्रदूषण पर चित्र बनाना ।

वर्ग - IX : अंक विभाजन एवं न्यूनतम संवाद अवधि

समय - 3 घंटे

		घंटी	अंक - 100
इकाई - 1	भारत एवं समकालीन विश्व-1	60	25
इकाई - 11	भारत-भूमि एवं लोग	60	25
इकाई - 111	लोकतांत्रिक राजनीति-1	52	22
इकाई - IV	अर्थशास्त्र की समझ	52	22
इकाई - V	आपदा प्रबन्धन	16	06
	कुल -	240	100

वर्ग - X : अंक विभाजन एवं न्यूनतम संवाद अवधि

समय - 3 घंटे

		घंटी	अंक - 100
इकाई - 1	भारत एवं समकालीन विश्व-11	60	25
इकाई - 11	भारत: संसाधन एवं उपयोग	60	25
इकाई - 111	लोकतांत्रिक राजनीति- 11	52	22
इकाई - IV	अर्थशास्त्र की समझ	52	22
इकाई - V	आपदा प्रबन्धन	16	06
	कुल -	240	100

विषय - भूगोल (IX एवं X)

मूल्यांकन

शिक्षण के साथ - साथ मूल्यांकन भी एक अनिवार्य शैक्षणिक कार्य है । वार्षिक / मुख्य परीक्षा की उत्तर पुस्तिकाओं के मूल्यांकन के अतिरिक्त शिक्षकों द्वारा निम्न अन्य गतिविधियों के द्वारा विद्यार्थियों का मूल्यांकन किया जाना चाहिए -

1. भूगोल में IX एवं X के विद्यार्थियों से विषय-वस्तु के अन्तर्गत किसी सम-सामयिक विषय पर प्रोजेक्ट कार्य (Project work) कराना चाहिए । वर्ग शिक्षक स्वयं ग्रेडिंग विधि के माध्यम से अथवा अंक विधि के माध्यम से मूल्यांकन करेंगे और प्राप्त अंकों को वार्षिक परीक्षाफल में जोड़ दिया जाएगा ।
2. विद्यार्थियों में अध्ययन के प्रति सतत लगाव रखने के लिए माह में एक बार वर्ग जाँच-परीक्षा आवश्यक है । इसके परीक्षाफल को अंतिम परीक्षाफल में जोड़ने की जरूरत नहीं है ।
3. वर्ग में प्रश्नोत्तर, वाद-विवाद या अंत्याक्षरी जैसे शैक्षणिक प्रतिस्पर्धा को उत्पन्न करने के लिए माह में कम-से-कम एक बार इस प्रकार का आयोजन आवश्यक है ।
4. मानचित्र निर्माण से संबंधित जाँच का कार्य भी समय-समय पर किया जाना चाहिए क्योंकि यह कार्य भूगोल जैसे विषय की आत्मा है इससे प्राप्त ग्रेड या अंक को अंतिम परीक्षा में जोड़ने पर विचार किया जा सकता है ।
5. वैसे अध्यायों के प्रदत्त कार्य आवश्यक हैं जहाँ सारणी बनाने से उनकी समझ और दक्षता में वृद्धि होगी । जैसे जनसंख्या वितरण एवं घनत्व के लिए राज्यवार भारत का सारणी तैयार करें और चार्ट और रेखाचित्र द्वारा मूल्यांकन हेतु प्रदर्शित करें ।

प्रश्न पत्र मॉडल (भूगोल)

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न दो प्रकार के होंगे :-
   (क) बहु विकल्पी प्रश्न ।
   (ख) रिक्त स्थानों की पूर्त्ति ।
2. लघु उत्तरीय प्रश्नों के दो प्रकार होंगे -
   (क) अति लघु उत्तरीय (50 शब्दों के उत्तर होंगे)
   (ख) लघु उत्तरीय (100 शब्दों के उतर होंगे)
3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न भी पूछे जायेंगे, जिनकी शब्द-सीमा कम-से-कम 300 शब्द होगी । इससे शिक्षार्थियों की लेखन-कला एवं तथ्य संकलन जैसे कौशल में समृद्धि हो सकेगी ।
4. मानचित्रों पर आधारित प्रश्न भी पूछे जायेंगे, जिसे दिये गए मानचित्र पर संबंधित विषय-वस्तु को चिह्नित कर सकें ।
5. सारणी आधारित प्रश्नों को भी जोड़ने की आवश्यकता है ।

भूगोल - IX

न्यूनतम संवाद अवधि

इकाई		घंटियों की संख्या		कुल समय (घंटा में)
1. स्थिति एवं विस्तार	-	06	-	4 घंटे
2	-	05	-	3 घंटे 20 मिनट
3	-	08	-	5 घंटे 20 मिनट
4	-	08	-	5 घंटे 20 मिनट
5	-	07	-	4 घंटे 40 मिनट
6	-	08	-	5 घंटे 20 मिनट
7	-	08	-	5 घंटे 20 मिनट
8	-	05	-	3 घंटे 20 मिनट
9	-	05	-	3 घंटे 20 मिनट
		60 period		40 घंटा

भूगोल - X

न्यूनतम संवाद अवधि

इकाई		घंटियों की संख्या	कुल समय (घंटा में)
1 (क)	-	09	6 घंटे
(ख)	-	08	5 घंटे 20 मिनट
(ग)	-	05	3 घंटे 20 मिनट
(घ)	-	04	2 घंटे 40 मिनट
(ड.)	-	04	2 घंटे 40 मिनट
(च)	-	05	3 घंटे 20 मिनट
(2)	-	07	4 घंटे 40 मिनट
(3)	-	05	3 घंटे 20 मिनट
(4)	-	08	5 घंटे 20 मिनट
(5)	-	05	3 घंटे 20 मिनट
		60 period	40 घंटा

राजनीति विज्ञान

कक्षा IX एवं X

प्रस्तावना : 'लोकतांत्रिक राजनीति' माध्यमिक स्तर पर समाज विज्ञान में पूर्व की पुस्तक 'हमारा संविधान और नागरिक जीवन' से भिन्न है । राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 एवं बिहार पाठ्यचर्या की रूपरेखा - 2008 में स्पष्ट उल्लिखित है कि नागरिकशास्त्र को छोड़ देना चाहिए और शिक्षार्थियों में लोकतांत्रिक राजनीति के विभिन्न पहलुओं की जानकारी देना व्यवहारिक होगा । अतएव इस आलोक में पुस्तक का नाम लोकतांत्रिक राजनीति भाग-1 एवं लोकतांत्रिक राजनीति भाग-2 किया गया है ।

इस वर्ग तक आते-आते शिक्षार्थियों के मस्तिष्क में परिपक्वता का बीजारोपण शुरू हो जाता है और उसमें राजनीतिक व्यवहारों की समझ विकसित होने लगती है।

लोकतांत्रिक राजनीति में शिक्षार्थियों को लोकतंत्र के विकास की कहानी से यात्रा शुरू करते हुए लोकतंत्र की समझ को विकसित किया जाता है । पुनः उन्हें लोकतंत्र के निर्माणकारी तत्त्वों की जानकारी दी जाती है । इसमें भारतीय संविधान की निर्माण की झलक देते हुए लोकतंत्र के चुनावी पहलुओं का ज्ञान शिक्षार्थियों को कराया जाता है । और अंत में लोकतांत्रिक समस्याओं से परिचित कराते हुए लोकतांत्रिक अधिकारों का ज्ञान देना आवश्यक हो जाता है ताकि शिक्षार्थी आगे जाकर लोकतांत्रिक राजनीति में प्रभावी रूप से भागीदार बन सकें ।

लोकतांत्रिक राजनीति भाग-2 शिक्षार्थियों का दूसरा पड़ाव है । यहाँ शिक्षार्थियों को लोकतांत्रिक व्यवहार के स्वरूप-निर्धारण में विभिन्न जातियों के प्रभाव को परखने हेतु राजनैतिक मूल्यों का अध्ययन कराया जाता है । पुनः सत्ता के विकेन्द्रीकरण के स्वरूप से रू-ब-रू कराते हुए राजनीति प्रतिस्पर्धा के बारे में बताया जाता है जहाँ शिक्षार्थी राजनीतिक दलों से परिचित होते हैं । इस प्रकार लोकतांत्रिक उपलब्धियों और चुनौतियों की पड़ताल कर पाने में सक्षम हो पाते हैं ।

कक्षा - IX

लोकतांत्रिक राजनीति भाग-1

इकाई	मुख्य-प्रकरण	उप-प्रकरण	उद्देश्य
1.	समकालीन विश्व में लोकतंत्र	लोकतंत्र की पृष्ठभूमि लोकतंत्र के विस्तार के विभिन्न चरण वैश्विक लोकतंत्र की परिकल्पना	विद्यार्थियों को लोकतंत्र की पहचान कराना और उसके विस्तार का एक खाका पेश करना ।
2.	लोकतंत्र क्या है ? लोकतंत्र क्यों ?	लोकतंत्र क्या है ? लोकतंत्र की विशेषताएँ	लोकतंत्र को परिभाषित करने हेतु अवधारणात्मक कौशल

		लोकतंत्र क्यों हो ? लोकतंत्र के गुणों की चर्चा । लोकतंत्र के पक्ष एवं विपक्ष में तर्क । सर्वोत्तम शासन के रूप में लोकतंत्र । लोकतंत्र का व्यापक अर्थ ।	को विकसित करना । किन ऐतिहासिक प्रक्रियाओं द्वारा लोकतंत्र विकसित हुआ और कैसे इसकी लोकप्रियता बढ़ी ? लोकतंत्र के विरुद्ध भ्राँतियों को समाप्त करना ।
3.	संविधान निर्माण	संविधान का अर्थ संविधान निर्माण की आवश्यकता भारतीय संविधान के निर्माण की प्रक्रिया भारतीय संविधान की विशेषताएँ	संविधान निर्माण की प्रक्रिया से परिचय । संविधान एवं संवैधानिक मूल्यों के प्रति सम्मान भाव विकसित करना । संविधान एक जीवंत दस्तावेज और परिवर्त्तनीय भी है ।
4.	लोकतंत्र में चुनावी राजनीति	लोकतंत्र में चुनाव की जरूरत क्यों ? जन-प्रतिनिधियों का चुनाव क्यों ? चुनावों में राजनीतिक प्रतिस्पर्द्धा का औचित्य । भारत में चुनावी प्रणाली : (क) निर्वाचन-क्षेत्र (आरक्षित/अनारक्षित) (ख) मतदाता-सूची (ग) चुनाव-अभियान (घ) मतदान और मतगणना भारत में चुनाव क्यों लोकतांत्रिक है ? (क) स्वतंत्र चुनाव आयोग (ख) स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनाव की चुनौतियाँ	प्रतिनिधियात्मक लोकतंत्र बनाम प्रतिस्पर्द्धी दलीय राजनीति के विश्लेषण को समझना । भारतीय चुनाव प्रणाली के सुपरिचित चुनाव-प्रणाली से परिचित होना और इसे स्वीकार करने के आधार से परिचय । चुनावी राजनीति में जनता के बढ़ते रुझान से परिचय । चुनाव-आयोग की अहमियत से परिचित कराना ।
5.	संसदीय लोकतंत्र की संस्थाएँ	संसदीय लोकतंत्र में निर्णय करनेवाली संस्थाएँ (क) संसद	केन्द्र सरकार की संरचना से परिचित कराना । संसद की अहम् भूमिका से

		(ख) राष्ट्रपति/ प्रधानमंत्री एवं मंत्रीपरिषद् (ग) उच्चतम न्यायालय तीनों संस्थाओं के अंतर्संबंध ।	अवगत होना । संसदीय कार्यप्रणाली से परिचय कराना । तीनों संस्थाओं के अंतर्संबंधों से अवगत होना ।
6	लोकतांत्रिक अधिकार	लेकतंत्र में अधिकार संविधान में अधिकारों की अनिवार्यता क्यों ? अधिकार क्या हैं ? लोकतंत्र में अधिकारों की क्या जरूरत है ? मौलिक अधिकार अधिकारों का बढ़ता दायरा मानवाधिकार, सूचना का अधिकार ।	अधिकारों के प्रति जागरूकता विकसित करना । मौलिक अधिकारों से परिचित कराना । मौलिक अधिकरों का उपभोग और वास्तविक जीवन में अधिकारों के हनन की संभावनाओं से अवगत होना । मौलिक अधिकार के संरक्षक के रूप में न्यायपालिका की भूमिका बताना । राष्ट्रीय मानवाधिकार एवं सूचना का अधिकार की भूमिका से अवगत करना ।

कक्षा - X

लोकतांत्रिक राजनीति भाग-2

इकाई	मुख्य-प्रकरण	उप-प्रकरण	उद्देश्य
1.	सत्ता की साझेदारी	क्या लोकतंत्र में द्वन्द्व के तत्त्व अन्तर्निहित हैं ? जातियों का हमारी लोकतांत्रिक राजनीति पर प्रभाव । क्या राजनीति जातियों के व्यवहार को परिवर्तित करता है ? लिंग भेद एवं साम्प्रदायिक विभेदों से लोकतंत्र किस हद तक प्रभावित होता है ?	भारतीय संदर्भ में सामाजिक विषमता एवं राजनीतिक प्रतिस्पर्धा को विश्लेषित करना । जातीय एवं साम्प्रदायिक चुनौतियों से भारतीय लोकतंत्र किस हद तक प्रभावित होता है, इसकी समझ विकसित करना । लिंग का परिप्रेक्ष्य किस रूप

			में भारतीय राजनीति को प्रभावित करता है, इसकी समझ विकसित करना ।
2.	सत्ता में साझेदारी की कार्य-प्रणाली	लोकतंत्र में सत्ता विभाजन के उपबंध । संघात्मक शासन व्यवस्था राष्ट्रीय एकता में संघात्मक व्यवस्था कैसे सहायक है ? किस हद तक सत्ता का विकेन्द्रीकरण राष्ट्रीय एकता के मूल्यों के संवर्धन में अपरिहार्य है ? लोकतंत्र कैसे विभिन्न सामाजिक समूहों को सन्निहित करता है ? बिहार में पंचायती राज व्यवस्था की एक झलक ।	विद्यार्थियों को संघीय व्यवस्था की जानकारी देना । सत्ता के विकेन्द्रीकरण की अवधारणा से सुपरिचित कराना । संघात्मक व्यवस्था में एकात्मकता की आत्मा को संवर्धित करना ।
3	लेकतंत्र में प्रतिस्पर्धा एवं संघर्ष	प्रतिस्पर्धा एवं संघर्ष के अर्थ : जनसंघर्षों की भूमिका राजनीतिक दल क्या हैं ? भारत के प्रमुख राजनीतिक दल (राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय) राजनीतिक दलों में प्रतिस्पर्धा का लोकतंत्र के सशक्तीकरण एवं राष्ट्रीय विकास में योगदान ।	लोकतंत्र के विस्तार में आमजन के संघर्ष एवं राजनीतिक दलों में प्रतिस्पर्धा की समझ को विकसित करना । भारत में दलीय व्यवस्था से परिचित कराना ।
4	लोकतंत्र की उपलब्धियाँ	क्या भारतीय लोकतंत्र अपने उद्देश्यों की प्राप्ति कर रहा है ? (क) उत्तरदायी एवं वैध शासन । (ख) आर्थिक संवाद और विकास । (ग) सामाजिक विषमता और सामंजस्य । भारतीय लोकतंत्र कितना	भारतीय लोकतंत्र की उपलब्धियों एवं कठिनाइयों के संदर्भ सें परिचित होते हुए शिक्षार्थियों में समानता, स्वतंत्रता, भ्रातृत्व एवं व्यक्ति की गरिमा के प्रति आलोचनात्मक कौशल विकसित करना ।

		सफल है ? भारत में लोकतंत्र की सफलता के कारक तत्त्व ।	
5	लोकतंत्र की चुनौतियाँ	क्या लोकतंत्र की अवधारणाएँ हमारे सिद्धांत एवं व्यवहार में सामंजस्य स्थापित कर पा रही हैं ? लोकतंत्र से जनता की अपेक्षाएँ । क्या भारतीय लोकतंत्र जनता की उन्नति, सुरक्षा और गरिमा के संवर्धन में सहायक है ? बिहार में लोकतंत्र की जड़ें कितनी गहरी हैं ?	लोकतंत्र के प्रभावकारी तत्त्वों और उनमें अन्तर्निहित कमियों को रेखांकित करते हुए बच्चों में लोकतंत्र को सबल बनाने हेतु सृजनात्मक दृष्टि प्रदान करना । जनता की सक्रिय भागीदारी हेतु कल्पनाशीलता को विकसित करना ।

राजनीति विज्ञान - IX

न्यूनतम संवाद अवधि

इकाई	घंटियों की संख्या		कुल समय (घंटा में)
1. लोकतंत्र का क्रमिक विकास	05	-	3 घंटा 20 मिनट
2. लोकतंत्र क्या है? लोकतंत्र क्यों ?	07	-	4 घंटा 30 मिनट
3. भारत के लोकतंत्र का निर्माण	10	-	6 घंटा 30 मिनट
4. लोकतंत्र में चुनावी राजनीति	10	-	6 घंटा 30 मिनट
5. संसदीय लोकतंत्र की संस्थाएँ	10	-	6 घंटा 30 मिनट
6. लोकतांत्रिक अधिकार	10	-	6 घंटा 30 मिनट
	योग - 52 पीरियड	-	32 घंटा 70 मिनट

राजनीति विज्ञान - X

न्यूनतम संवाद अवधि

इकाई	घंटियों की संख्या		कुल समय (घंटा में)
1. लोकतंत्र के व्यावहारिक स्वरूप	10	-	6 घंटा 30 मिनट
2. सत्ता में भागीदारी की कार्य-प्रणाली	12	-	8 घंटा
3. प्रतिस्पर्धा एवं संघर्ष	10	-	6 घंटा 30 मिनट
4. लोकतंत्र की उपलब्धियाँ	10	-	6 घंटा 30 मिनट
5. लोकतंत्र की चुनौतियाँ	10	-	6 घंटा 30 मिनट
योग -	52 पीरियड		33 घंटा 20 मिनट

प्रश्न पत्र मॉडल (राजनीति विज्ञान)

1- वस्तुनिष्ठ प्रश्न दो प्रकार के होंगे :-

(क) बहु विकल्पी प्रश्न ।

(ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति ।

2. लघु उत्तरीय प्रश्नों के दो प्रकार होंगे -

(क) अति लघु उत्तरीय (50 शब्दों के उत्तर होंगे)

(ख) लघु उत्तरीय (100 शब्दों के उतर होंगे)

3. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न भी पूछे जायेंगे, जिनकी शब्द-सीमा कम-से-कम 300 शब्द होगी । इससे शिक्षार्थियों की लेखन- कला एवं तथ्य संकलन जैसे कौशल में समृद्धि हो सकेगी ।

अर्थशास्त्र की समझ
वर्ग - IX एवं X

1- प्रस्तावना :

राष्ट्र का निर्माण एवं प्रगति नागरिकों के ऊपर निर्भर है । नागरिकों का सोच साकारात्मक एवं समग्र, व्यवहार संतुलित एवं मर्यादित, चरित्र धवल, ज्ञान एवं सूचना सम्पन्न, दृष्टि मानवीय और चेतना प्रखर हो तो राष्ट्र की उन्नति दिन-दूनी रात-चौगुनी होगी । जन्म से मृत्युपर्यन्त व्यक्ति परिवेश एवं समाज से अन्त:क्रिया करता रहता है । अतएव राष्ट्र के नागरिकों को समाज एवं परिवेश की विस्तृत जानकारी एवं समग्र-समझ अपरिहार्य है । इन्हीं तथ्यों के आधार पर समाज विज्ञान को माध्यमिक स्तर पर एक अनिवार्य विषय बनाया गया है, साथ ही, इस दृष्टि को सम्पोषित करने वाले विषयों को भी स्थान दिया गया है ।

समाज विज्ञान के पाठ्यक्रम मे मुख्य रूप से भूगोल, इतिहास, राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र के प्रकरण सम्मिलित किये गये हैं, साथ ही, समाज-शास्त्र और वाणिज्य शास्त्र के भी कुछ प्रकरण सम्मिलित हैं । ये सभी साथ मिलकर देशकाल की पृष्ठभूमि में समाज के समग्र दृष्टिकोण को प्रस्तुत करते हैं। साथ ही, हम जान पाते हैं कि ये सभी विषय समाज एवं राष्ट्र निर्माण में एक दूसरे से कैसे और कितने जुड़े हैं । पुन: इनकी पड़ताल की भिन्न विधियाँ, समाज के अध्ययन में विविध आयाम प्रस्तुत करती है जिससे उसका एक समग्र सोच(दृष्टिकोण)बन पाता है ।

अर्थशास्त्र की समझ
वर्ग - IX

इकाई	विषयवस्तु	उद्देश्य	संसाधन/कियाशीलन
1- बिहार के एक गाँव की कहानी	गाँव की कहानी के माध्यम से गाँव-कस्बा-शहर-राज्य-देश-विश्व सबके बीच उत्पादन की प्रक्रिया के द्वारा आपस के संबंध को जानना । उत्पादन के साधनों - भूमि, श्रम, पूँजी और उद्यम के बारे में जानना ।	मूर्त उदाहरण के द्वारा उत्पादन के सिद्धांत को जानना । भूमि, श्रम, पूँजी एवं उद्यम हरेक की उत्पादन की प्रकिया में महत्ता को समझना ।	शिक्षाशास्त्रियों को अपने गाँव में हो रहे उत्पादन की प्रक्रिया को कहानी के माध्यम से लिखवाना । द्विपक्षीय संवाद के माध्यम से बच्चों में समझ का विकास करना ।
2- मानव - एक संसाधन	मानव एक संसाधन है - इसकी समझ । बिहार की जनसंख्या और उसके अव्यवों को जानना । जनसंख्या को मानव संसाधन में परिवर्त्तन हेतु शिक्षा, स्वास्थ्य एवं मकान की उपयोगिता को जानना ।	मानव संसाधान के विकास हेतु जनसंख्या, शिक्षा, स्वास्थ्य और मकान के अन्योनाश्रय संबंधों की जानकारी का	टीचिंग लर्निंग मैटेरियल का विकास (जैसे चार्ट) शिक्षार्थियों द्वारा अपने टोले/मुहल्ले का सर्वेक्षण कर उसकी रिपोर्ट का प्रस्तुतीकरण ।

		विकास । मानव संसाधन के विकास में अपनी भूमिका को समझना ।	
3- गरीबी	गरीबी की समझ और स्वरूप । सूचकांक द्वारा गरीबी की माप । संवाद,लेखन के द्वारा बिहार में गरीबी के आयाम, गरीबी के कारण एवं निदान को जानना, गरीबी रेखा क्या है, गरीबी उन्मूलन के सरकारी एवं गैर सरकारी प्रयास ।	गरीब एवं गरीबी को समझना । गरीबी उन्मूलन में सरकारी प्रयासों की जानकारी प्राप्त करना । स्थानीय स्तर पर सरकारी एवं गैर सरकारी प्रयासों के परिणाम को समझना ।	परिवेश से उदाहरण द्विपक्षीय प्रश्नोत्तरी विधि बच्चों को उपाय ढूँढ़ने के लिए स्वलेखन
4- बेकारी	लेख के माध्यम से :- बेकारी को जानना । बेकारी कैसे जन्म लेती है ? बेकारी से कैसे मुक्ति प्राप्त की जा सकती है ? बेकारी के सामाजिक और आर्थिक प्रभाव ।	बेकारी क्या है ? जनसंख्या की बेकारी बढ़ाने में भूमिका । बेकारी कम करने के सरकारी एवं गैर सरकारी प्रयासों की स्थानीय स्तर पर परिणाम को समझना ।	व्याख्यान विधि । अपने टोले-मुहल्ले के युवाओं से बातचीत । वर्ग में बातचीत का प्रस्तुतीकरण ।
5- कृषि, खाद्यान्न सुरक्षा एवं गुणवत्ता	बिहार में कृषि खाद्यान्न के प्रकार खाद्यान्न के स्रोत खाद्यान्न की गुणवत्ता अकाल के दौरान खाद्यान्न में आत्मनिर्भरता खाद्य सुरक्षा में सरकारी एवं गैर सरकारी योगदान ।	शिक्षार्थियों के बीच खाद्यान्न के प्रति जीवन के मूल्य एवं आवश्यकता की जानकारी विकसित करना ।	भ्रमण क्रिया के द्वारा। सतत अभ्यास रीति । द्विपक्षीय प्रश्नोत्तरी विधि ।

		खाद्यान्न की आपूर्त्ति में सरकारी पहल की समझ विकसित करना । खाद्यान्न की गुणवत्ता का ज्ञान होना ।	
6- कृषक- मजदूरों की समस्याएँ	बिहार में कृषक-मजदूरों की समस्याएँ । बिहार में कृषक-मजदूरों के बीच समस्याओं के समाधान के तौर पर पलायन का इस्तेमाल । बिहार में कृषक मजदूरों के पलायन से उत्पन्न समस्याएँ और उनके निदान ।	आज हमारे यहाँ के बहुत से कृषि मजदूर दिल्ली, कलकत्ता, पंजाब, मुंबई आदि की ओर क्यों पलायन कर रहे हैं ? इसकी विस्तृत व्याख्या करना और उसके कारणों की समझ विकसित करना ।	भिखारी ठाकुर एवं अन्य लोक गीतकारों के लोकगीतों के माध्यम से पलायन के उद्देश्य एवं उसके आर्थिक पहलुओं के प्रति शिक्षार्थियों के बीच समझ विकसित करना ।

अर्थशास्त्र की समझ

वर्ग - X

इकाई	विषयवस्तु	उद्देश्य	संसाधन/क्रियाशीलन
1- अर्थव्यवस्था एवं इसके विकास का इतिहास (बिहार के संदर्भ में)	अर्थव्यवस्था का परिचय । विकास की समझ । विकास की माप एवं विविध सूचकांक । बिहार के विकास की स्थिति । देश के आर्थिक विकास में बिहार के आर्थिक विकास की भूमिका । मूलभूत आवश्यकताएँ एवं विकास का संबंध ।	अर्थव्यवस्था के अर्थ के साथ शिक्षार्थियों को विकास के इतिहास से परिचय कराना । शिक्षार्थियों के अंदर राज्य और देश की आर्थिक प्रगति में अपनी भूमिका के प्रति जागरूक कराना । राज्य एवं देश के विकास में मूलभूत	शिक्षार्थियों को अपने गाँव के विकास की प्रक्रिया को कहानी के माध्यम से लिखवाना । द्विपक्षीय संवाद के माध्यम से बच्चों में समझ का विकास करना ।

		आवश्यकताओं के संबंध की समझ विकसित करना ।	
2- राज्य एवं राष्ट्र की आय	लेख के माध्यम से बिहार की आय राष्ट्रीय आय प्रतिव्यक्ति आय और विकास में राजकीय/ राष्ट्रीय एवं प्रति व्यक्ति आय का योगदान	शिक्षार्थियों के अंदर राजकीय आय, राष्ट्रीय आय एवं प्रतिव्यक्ति आय की समझ विकसित करना । विकास में शिक्षार्थियों के परिवार के आय की महत्ता की समझ विकसित करना ।	शिक्षण अधिगम सामग्री का उपयोग (जैसे ग्राफ) शिक्षार्थियों द्वारा अपने टोले/मुहल्ले का सर्वेक्षण कर उसकी रिपोर्ट का प्रस्तुतीकरण
3- मुद्रा, बचत एवं साख	मुद्रा का इतिहास मुद्रा है क्या ? मुद्रा का आर्थिक महत्त्व । बचत एवं साख क्या है ?	शिक्षार्थियों के अंदर मुद्रा के उपयोग की समझ, बचत एवं साख की विकास में भूमिका की समझ उत्पन्न करना । मौद्रिक सिद्धांतों का आभ्यास करना ।	परिवेश से उदाहरण द्विपक्षीय प्रश्नोत्तरी विधि शिक्षार्थियों के उपाय ढूँढ़ने के लिए स्वलेखन

4- हमारी वित्तीय संस्थाएँ	हमारे राज्य की वित्तीय संस्थाएँ । हमारे देश की वित्तीय संस्थाएँ । राज्य एवं देश के आर्थिक विकास में इन संस्थाओं की भूमिकाएँ । व्यावसायिक बैंक के कार्य और इनकी राज्य के विकास में भूमिका सहकारिता और राज्य के विकास में भूमिका । स्वयं सहायता समूह गाँव, कस्बा और जिला के विकास में इसकी भूमिका ।	प्रत्येक स्तर की वित्तीय संस्थाओं के बारे में समझ विकसित करना । गरीबी एवं बेकारी उन्मूलन में इनकी भूमिका को समझना । वित्तीय प्रणाली को समझना ।	व्याख्यान विधि । अपने टोले-मुहल्ले की महिलाओं से बातचीत । समूह--संवाद ।
5 - रोजगार एवं सेवाएँ	भारतीय एवं बिहार की अर्थव्यवस्था में सेवा-क्षेत्र का महत्त्व रोजगार सृजन के रूप में सेवाओं की भूमिका । भारत विश्व को सेवा प्रदाता के रूप में । सेवा क्षेत्र के विस्तार एवं विकास के लिए बुनियादी सुविधाएँ एवं शिक्षा की भूमिका ।	शिक्षार्थियों के अन्दर रोजगार सृजन की प्रक्रिया की समझ पैदा करना । रोजगार के सृजन में सेवा-क्षेत्र की भूमिका की जानकारी । सरकार द्वारा इस क्षेत्र में विनियोग क्यों नहीं किया जा रहा है इसकी समझ विकसित करना ।	प्रश्नोत्तरी एवं व्याख्यान विधि द्वारा । द्विपक्षीय प्रश्नोत्तरी विधि ।
6- वैश्वीकरण	वैश्वीकरण क्या है ? भारत में वैश्वीकरण क्यों ? 1991 से पहले वैश्वीकरण का इतिहास बिहार में वैश्वीकरण का प्रभाव राज्य नियंत्रित उद्योग 1991 का आर्थिक सुधार वैश्वीकरण एवं आम आदमी	शिक्षार्थियों को यह समझाना कि वैश्वीकरण के कारण बिहार किस तरह प्रभावित हो रहा है ।	प्रश्नोत्तरी एवं व्याख्यान विधि द्वारा । उदाहरण रीति ।

7- उपभोक्ता जागरण एवं संरक्षण	उपभोक्ता जागरण । उपभोक्ता शोषण के कारण । उपभोक्ता संरक्षण एवं इसमें सरकार की भूमिका । आर्थिक शोषण के संदर्भ में मानवाधिकार आयोग का महत्त्व ।	उपभोक्ता के रूप में अपने अधिकार एवं कर्त्तव्यों की जानकारी, साथ ही शोषण से रक्षा के लिए वैधानिक उपायों की जानकारी ।	मीडिया का उदाहरण देकर कुछ संबंधित प्रश्नों पर चर्चा । व्याख्यान विधि द्वारा । वृत्तचित्र प्रदर्शन एवं चर्चा ।

वर्ग - (IX)

न्यूनतम संवाद अवधि

इकाई	घंटियों की संख्या		कुल समय (घंटा में)
1. बिहार की एक गाँव की कहानी	08	-	5 घंटा 20 मिनट
2. मानव - एक संसाधन	08	-	5 घंटा 20 मिनट
3. गरीबी	15	-	10 घंटा
4. बेकारी	14	-	9 घंटा 20 मिनट
5. कृषि, खाद्यान्न, सुरक्षा एवं गुणवत्ता	07	-	4 घंटा 20 मिनट
6. कृषक मजदूरों की समस्या			
योग -	**52 पीरियड**		**33 घंटा 20 मिनट**

वर्ग - (X)

न्यूनतम संवाद अवधि

इकाई	घंटियों की संख्या		कुल समय (घंटा में)
1. अर्थव्यवस्था एवं इसके विकास का इतिहास(बिहार के संदर्भ में)	11	-	7 घंटा 20 मिनट
2. राज्य एवं राष्ट्र की आय	08	-	5 घंटा 20 मिनट
3. मुद्रा, बचत एवं साख	06	-	4 घंटा
4. हमारी वित्तीय संस्थाएँ	09	-	6 घंटा
5. रोजगार एवं सेवाएँ	06	-	4 घंट
6. वैश्वीकरण	06	-	4 घंटा
7. उपभोक्ता जागरण एवं संरक्षण	06		4 घंटा
योग -	**52 पीरियड**		**33 घंटा 20 मिनट**

मॉडल प्रश्नपत्र

वर्ग - IX एवं X

कुल अंक - 22

- वस्तुनिष्ठ प्रकार के चार प्रश्न पूछे जाएँगे और प्रत्येक प्रश्न एक अंक का होगा -4 X 1 = 4 अंक
- लघुत्तरीय प्रकार के दो प्रश्न पूछे जाएँगे और प्रत्येक प्रश्न तीन अंक का होगा । -2 X 3 = 6 अंक
- दीर्घउत्तरीय प्रकार के दो प्रश्न पूछे जाएँगे जिसके लिए कुल सात अंक होंगें । -2 X 3 1/3 = 7 अंक
- शिक्षक के द्वारा दिए गए प्रोजेक्ट कार्य के लिए तीन अंक निर्धारित होंगे । -1 X 3 = 3 अंक
- मानचित्र कार्य से संबंधित चार प्रश्न होंगे तथा प्रत्येक आधा अंक का होगा । -½ X 4 = 2 अंक

विषय - अर्थशास्त्र

वर्ग - IX एवं X

मूल्यांकन विधि

- शिक्षण विधि के अतिरिक्त बच्चों को परियोजना (प्रोजेक्ट) कार्य भी करने के लिए दिया जाना चाहिए । परियोजना (प्रोजेक्ट) कार्य का मूल्यांकन शिक्षक करेंगे और इसके लिए कुछ अंक निर्धारित किए जा सकते हैं या फिर शिक्षक के द्वारा ग्रेड भी दिया जा सकता है जो कि अंतिम रूप से परीक्षाफल के अंकों में जोड़ा जाना चाहिए ।
- सप्ताह में एक दिन शिक्षार्थियों के बीच वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया जाना चाहिये, जिससे शिक्षार्थियों में आर्थिक परिचर्चा की समझ विकसित हो । वो किसी भी प्रकार की आर्थिक क्रिया के गुण-दोष को आसानी से समझ सकते हैं ।
- विषय-वस्तु को शिक्षार्थियों के बीच संप्रेषित करने के बाद माह में एक बार वर्ग-जाँच का आयोजन किया जाना चाहिये । इससे शिक्षक सहज रूप से यह जान या समझ पाएँगे कि बच्चे उनके द्वारा संप्रेषित किये गए व्याख्यान को कितना समझ पा रहे हैं ।
- वर्ग में प्रश्नोत्तर विधि भी लागू करना प्रभावी हो सकती है । प्रश्नोत्तर विधि के अन्तर्गत शिक्षक वर्ग में उपस्थित शिक्षार्थियों से प्रश्न पूछेंगे साथ-ही-साथ शिक्षार्थियों से पूछे गए प्रश्नों के उत्तर जानने का प्रयास करेंगे । इससे शिक्षार्थियों में संप्रेषण कौशल का विकास होगा ।

आपदा प्रबंधन

वर्ग - IX एवं X

वर्ग - IX

इकाई - V

- मानवीय गलतियों के कारण घटित आपदाएँ - नाभकीय (Nuclear), जैविक (Biological), रासायनिक Chemical) ।
- सामान्य आपदाएँ (common hazard) - निवारण एवं नियंत्रण ।
- समुदाय आधारित आपदा प्रबंधन ।

वर्ग - X

इकाई - V

- बाढ़, सुखाड़, भूकंप एवं सुनामी ।
- प्रबंधन हेतु निर्माण कार्य - बाँध, नहर, तालाब, आहर, पईन एवं कुँए का विकास, भूकंप-रोधी भवन निर्माण ।
- जीवन रक्षक आकस्मिक प्रबंधन ।
- आपदा काल में वैकल्पिक संचार-व्यवस्था (Communication System)
- आपदा और सह-अस्तित्व ।